भगवान श्रीकृष्ण चाँद देखते हैं

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

रात होने लगी थी और गोकुल गाँव के ऊपर का आसमान स्याह नीले-काले रंग का हो रहा था — मानो एक रेशमी चादर आसमान को ढक रही हो। इस पर्दे के पीछे से तारे झाँक रहे थे; वे यहाँ-वहाँ जगमगाते, टिमटिमाते दिखाई दे रहे थे। हवा में मोगरे-सी महक थी।

गाँव के एक घर में, एक युवा माँ बैठी, अपने नन्हें बालक को देख रही थी कि कैसे वह कमरे में चुपचाप यहाँ से वहाँ तेज़ी-से भाग रहा है।

“कृष्ण” यशोदा माँ ने कहा। अपने बेटे की ओर देखते समय उनका सिर एक ओर हल्का-सा झुका हुआ था; उनकी आँखों में मृदुलता थी। “क्या कर रहे हो?”

भगवान श्रीकृष्ण मिट्टी के बड़े-से बर्तन में झाँक रहे थे, वह उन बर्तनों में से एक था जिसमें उनकी माँ माखन बिलोती थीं। जब उन्हें वहाँ ऐसी कोई भी चीज़ नहीं मिली जो उनके मन को भाए तो वे पास पड़ी मेज़ की ओर गए, जहाँ पर एक छोटी-सी लकड़ी की बाँसुरी रखी थी। उन्होंने उस बाँसुरी को उठाया, कुछ पल के लिए उसे ध्यान से देखा और फिर उसे नीचे रख दिया। उन्होंने कमरे में चारों ओर अपनी नज़र दौड़ाई।

“क्या हुआ कृष्ण?” यशोदा माँ ने पूछा।

“मुझे खेलना है,” कृष्ण ने कहा। “पर मैं किससे खेलूँ?”

“देखते हैं,” यशोदा माँ ने खड़े होते हुए कहा। “ये कैसे रहेंगे?” उन्होंने पास रखी अलमारी का दरवाज़ा खोल दिया जिसमें तरह-तरह के रूप-आकारों व रंगों के खिलौने रखे थे।

“हूँऽऽ” कृष्ण ने उन खिलौनों को देखते हुए कहा। वे अपने होंठ चबा रहे थे।

“यहाँ रुको,” यशोदा माँ ने कहा। “मैं दूसरे कमरे में जाकर देखती हूँ कि मुझे वहाँ तुम्हारे लिए और क्या मिल सकता है।”

यशोदा माँ खिलौने ढूँढ़ने चली गईं और कृष्ण कमरे में यहाँ से वहाँ घूमते रहे; वे कमरे की हर चीज़ का निरीक्षण करते, चीज़ों को उठाते और फिर उन्हें नीचे रख देते। वे कालीन के साथ खेलते रहे, उसके

किनारे पर लगी झालर के साथ खेल रहे थे तभी उन्हें महसूस हुआ, मन्द, सुगन्धित हवा का शीतल स्पर्श।

उन्होंने खिड़की की तरफ़ देखा। यशोदा माँ ने खिड़की के सामने जो महीन-सा पर्दा बाँध रखा था, हवा उसे हल्के-हल्के ऐसे हिला रही थी मानो पानी में तरंगें उठ रही हों। वे और नज़दीक गए।

“कृष्ण!” तभी माँ की मधुर आवाज़ दूसरे कमरे से बहकर उनकी ओर आती हुई सुनाई दी। “यह देखो!”

यशोदा माँ दरवाज़े पर आ गईं। उनके हाथों में रस्सी और कपड़े के कुछ टुकड़े थे और कुछ अन्य अनोखी चीज़े जिनसे कृष्ण शायद खेल सकते थे।

लेकिन — कमरा तो ख़ाली था! यशोदा माँ ने घबराकर आस-पास देखा, उनके माथे पर चिन्ता की हल्की-सी लकीरें आ गई थीं। अब कृष्ण कहाँ चला गया?

और फिर उन्हें नज़र आई पर्दे के पीछे किसी की आकृति, महीन सफ़ेद पर्दे के नीचे से कृष्ण के नन्हें-नन्हें पाँव झाँक रहे थे। यशोदा माँ मुस्कराइ-और खिड़की के पास गईं। उन्होंने पर्दा हटाया और कुछ बोलने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि वे अचानक रुक गईं।

क्योंकि वहाँ था उनका बेटा, उनका कृष्ण जो टकटकी लगाए बाहर देख रहा था, उसके चेहरे पर सौम्यता व मृदुलता छाई थी — इतनी मासूमियत, ऐसा लग रहा था कि मानो व इस लोक की हो ही न। नन्हें कृष्ण की आँखें निर्मल उज्ज्वलता से चमक रही थीं; वे ललक से भरी थीं।

उसी कुतूहल भरी दृष्टि के साथ वे अपनी माँ की ओर मुड़े। बिना कुछ कहे, उन्होंने आसमान की ओर संकेत किया। और वहाँ गहरे नीले आकाश के पटल पर तेजोमय प्रकाश से जगमगा रहा था, चाँद। गुलाबी-सफ़ेद रंग का पूर्ण चन्द्र था, उसकी सतह पर जगमगाते नक्षत्र ऐसे लग रहे थे मानो हीरों से बनी महीन ज़रदोज़ी हो।

“मैया. . .,” कृष्ण ने कहा। “मुझे चाँद से खेलना है।”

“चाँद?” यशोदा माँ ने पूछा।

“हाँ,” कृष्ण ने कहा। “चाँद। क्या आप मुझे वह लाकर देंगी?”

“कृष्ण, न जाने मैं चाँद को यहाँ ला भी सकती हूँ या नहीं” उनकी माँ ने सौम्यता से कहा।

“पर — पर मुझे उससे खेलना है।” कृष्ण की आवाज़ में इतनी निश्छलता, इतनी निर्मल लालसा थी कि यशोदा माँ को आश्चर्य हुआ कि उनका हृदय वहीं पिघल क्यों नहीं गया।

“हाँ, मैं जानती हूँ,” उन्होंने कहा। “पर चाँद इतनी दूर आकाश में है। और हम यहाँ अपने घर पर हैं।”

“चाँद हमारे साथ यहाँ क्यों नहीं हो सकता? हमारे घर में?”

“हाँ, पर हम उसे अपने घर से देख सकते हैं, हैं न?”

कृष्ण ने एक बार फिर खिड़की से बाहर देखा। उनके होंठ काँपने लगे।

“मैया!” उन्होंने कहा। अब उनकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। “मैं चाँद से खेलना चाहता हूँ। मुझे चाँद के साथ खेलना *ही* है! क्या आप उसे मेरे लिए यहाँ नहीं ला सकतीं?”

यशोदा माँ ने कृष्ण के बालों की एक लट को उनके कान के पीछे करते हुए कहा, “क्यों न हम उन खिलौनों के साथ खेलें जो हमारे पास पहले से हैं? वे चाँद तो नहीं हैं फिर भी शायद तुम्हें उनके साथ खेलना अच्छा लगे।”

“नहीं। मुझे चाँद ही चाहिए!”

और फिर कृष्ण ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे, उनकी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बहने लगीं। उन्होंने मुड़कर दोबारा चाँद की ओर देखा। उनका दुखी क्रन्दन रात की निःशब्दता में गूँजने लगा।

यशोदा माँ कोई उपाय खोजने का भरसक प्रयास करने लगीं। अपने पुत्र का रोना सुनकर उनका हृदय भी व्यथित हो उठा। वे उसे कैसे समझाने वाली थीं? वे भला उसे चाँद कैसे लाकर देतीं?

और यशोदा माँ अपने आप से ये प्रश्न पूछ रही थीं कि तभी उन्हें कमरे के दूसरे कोने में एक टुकड़ा कुछ चमकता हुआ नज़र आया। जिसमें उनकी साड़ी का किनारा प्रतिबिम्बित हो रहा था। उसे ठीक से देखने के लिए वे खिड़की की चौखट से उठीं, जहाँ वे बैठी थीं।

दरअसल, वह धातु के पात्र का एक हिस्सा था जो उथला और गोलाकर था और चाँदी की तरह चमक रहा था। उसे देखते ही यशोदा माँ के चहरे पर मुस्कान छा गई। उन्होंने उसे उठाया और रसोईघर में ले गईं।

कुछ देर बाद वे वापस आईं और दबे-पाँव खिड़की के पास गईं, जहाँ उनका बेटा अब भी खड़ा रो रहा था।

“कान्हा!” उन्होंने कहा। “देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूँ।”

अचानक रुदन समाप्त हो गया। अपनी हथेलियों के पिछले भाग से अपने चेहरे के आँसुओं को पोंछते हुए कृष्ण अपनी माँ की ओर मुड़े।

“देखो?” यशोदा माँ ने कहा। “चाँद यहाँ पर है।”

उन्होंने अपने हाथों में पकड़े हुए पात्र को कृष्ण की ओर बढ़ाया। उन्होंने उसमें पानी भर दिया था और इस पानी की सतह बिल्कुल शान्त व स्थिर थी। पात्र के ठीक बीचोबीच, स्पष्टता से जिसका प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था, वह था चाँद।

कृष्ण ने कुतूहल से इस चाँद की ओर देखा। उन्होंने पानी में एक उँगली डाली और फिर दूसरी, चाँद धुँधली तरंगें बन गया और एक बार फिर तरंगे छँटीं तो चाँद दिखाई दिया। कृष्ण खिलखिलाकर हँसने लगे और फिर अपना पूरा हाथ पानी में डाल दिया।

यशोदा माँ उन्हें खेलते हुए देख रही थीं। एक चाँद बाहर था जिसकी चाँदनी अन्दर आ रही थी। एक चाँद अन्दर था जो पानी में जगमगा रहा था। और वहीं था उनका पुत्र, दोनों चन्द्रमाओं के प्रकाश से आच्छादित या शायद उस प्रकाश से जो उनके पुत्र का अपना ही था — इसका भेद जान पाना कठिन था।

सब ओर कितना प्रकाश है, यशोदा माँ ने मन-ही-मन सोचा।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।